ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 147-151

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कुषाण शासकों के सिक्कों पर अंकित देवी-देवता

सारिका दुबे

शोध अध्येत्री– प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृत एवं पुरातत्व– गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखंड), भारत

Received- 29.04.2020, Revised- 04.05.2020, Accepted - 08.05.2020 E-mail: Sarika2417@gmail.com

सारांश : *सिक्कों पर धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रतीक चिन्ह इतिहास की जानकारी देता है। तत्कालीन कला कुशलता एवं सौंदर्य बोध को सिक्कों के अंकन में स्पष्टतः देखा जा सकता है। भारतीय मुद्रा शास्त्र के इतिहास में कुषाण राजाओं की मुद्राएं अद्वितीय स्थान रखती है। इस वंश के राजाओं द्वारा स्वर्ण मुद्रा का प्रचलन किया गया तथा उन पर विभिन्न देवी–देवताओं का अंकन हुआ है। जिन पर तत्कालीन सम्प्रदायों के देवताओं के प्रतीक अंकित हैं, जो क्रमशः पारसी, यूनानी, रोमन, बौद्ध तथा ब्राह्मण हैं। कुषाण राजाओं के सिक्कों पर अंकित विभिन्न धर्म के प्रतीकों से उनके धार्मिक सहिष्णुता का आभास होता है।*

कुंजीभूत शब्द– कुषाण, सिक्के, पारसी, यूनानी, रोमन, बुद्ध, स्वर्ण मुद्रा, प्रतीक, सहिष्णुता, कुशलता, मुद्राएं।

प्रस्तावना– इतिहासकार, अंकशास्त्री, समाजशास्त्री और मानवविज्ञानियों के लिए सिक्कें निःसंदेह बहुत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक हैं क्योंकि किसी भी देश की राजनितिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए यह एक मूल्यवान स्त्रोत सामग्री है। धार्मिक इतिहास के क्षेत्र में भी सिक्कों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राचीन काल से आधुनिक युग तक मुद्रा का प्रचलन अनवरत् चला आ रहा है। मुद्रा स्वयं में एक सीमित आकार की मुख्यतः किसी धातु की बनी होती है, जिसमे कई जानकारियाँ समाहित होती हैं। प्राचीन विश्व के इतिहास के अवलोकन में मुद्राओं की प्राथमिक स्रोत के रूप में उपयोगिता रही है। प्राचीन भारत तथा उनके राजाओं के शासन तथा कार्यों की जानकारी उपलब्ध करने में भी मुद्राओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। भारत का लम्बे समय से विश्व के अन्य क्षेत्रों से सम्बन्ध रहा है। सर्वप्रथम भारत का विदेषियों से संपर्क व्यापारिक व धार्मिक प्रयोजन से हुआ। उसके बाद प्राग्मौर्य युग में ईरानियों के आक्रमण से विदेशी आक्रमणों का अनवरत् सिलसिला प्रारंभ हुआ, जो सिकंदर, डिमेट्रियस, मेनाण्डर आदि यूनानी आक्रमणकारियों, शक, पह्लव, कुषाण, आभीर, हूणों आदि से लेकर मुसलमानों के आगमन तक चलता रहा। विभिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से आये ये लोग जिनकी संस्कृति, मूल्य, परम्पराएं तथा सामाजिक ढांचा भारतीय सामाजिक परम्पराओं, मूल्यों तथा संस्कृति से भिन्न था, समय के साथ भारतीय समाज तथा संस्कृति में घुल मिल गए।

चीन के उत्तर–पश्चिम की घुमन्तु व बर्बर यू–ची की एक शाखा ने भारतीय संस्कृति पर अपनी सकारात्मक व अमिट छाप छोड़ी है, जिसे कुषाण वंश के नाम से जाना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था की दृष्टि से कुषाण वंश का काल अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। कुषाण वंश का गौरव न केवल उनके साम्राज्य विस्तार तथा सामाजिक समरसता में है, परन्तु भारत की आर्थिक उन्नति में भी है। पश्चिम से व्यापार बढ़ाने हेतु नए मार्गो की खोज, नई वैज्ञानिक तकनीकी, व्यापार–वाणिज्य में स्वर्ण मुद्राओं के समावेश से भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल्य बढ़ा। पाश्चात्य देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की दृष्टि से कुषाणों का समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है। व्यापार बढ़ने से आवश्यक रूप से निश्चित मानक के सिक्कों की आवश्यकता बढ़ गयी, फलस्वरूप कुषाण शासकों द्वारा सिक्कों का प्रचलन प्रचुर मात्रा में कराया गया। कुषाण शासकों द्वारा स्वर्ण, रजत तथा ताम्र मुद्राओं का प्रचलन किया गया। कुषाणों ने ही सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों को भारत में प्रचलित किया। चाँदी के सिक्के बहुत ही कम मात्रा में चलाये गए जो संभवतः प्रयोगात्मक थे, क्योंकि शक शासनकाल में ही रजत मुद्राओं की साख अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में घट गयी थी। कुषाणों द्वारा चलाये गए सोने के सिक्कें रोम से प्राप्त सोने के सिक्कों से तौल और आकार के समान हैं। जूलियस सीजर के समय से रोम में सिक्के बहुतायत में बनने लगे थे केनेडी द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि कुषाणकालीन सिक्के रोमन सिक्कों से पुराने हैं अतः यह रोम के सोने के सिक्कों के अनुकरण नहीं हैं।

कुषाण वंश का इतिहास गौरवशाली है, जिसका ज्ञान विभिन्न प्राथमिक स्रोतों, प्राचीन साहित्यों तथा ज्योतिष ग्रंथों से मिलता है। कुषाण जिन्होंने उत्तर भारत के बहुत बड़े भू भाग पर पहली शताब्दी ईस्वी में शासन किया वहां उन्होंने अपने शासनकाल में न केवल प्रचलित महत्वपूर्ण धर्मों को संरक्षण दिया अपितु अनेक अल्प प्रचलित धर्मों के विकास में भी योगदान दिया। मानव रूप में बुद्ध का अंकन सर्वप्रथम कनिष्क के सिक्कों पर देखा जाता है इससे पूर्व

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

का अंकन प्रतीकात्मक रूप में देखा गया है। कनिष्क द्वारा ही शक सम्वत् का प्रारम्भ किया जो आज भारतवर्ष में राष्ट्रीय पंचांग के रूप में प्रचलित है। कुषाण साम्राज्य भारत तथा मध्य एशिया में फैला था, जिसके इतिहास को प्रभावित करने में कुषाण शासकों की भूमिका अत्यंत सराहनीय है। कुषाण वंश की प्रारंभिक जानकारी चीनी साहित्य में मिलती है, फान–ए कृत हाऊ–हान–शू में प्रथम सदी में कुषाणों के बारे में जानकारी मिलती है, जिसके अनुसार, कुजुल कडफिसेस यू–ची कबीलों में सर्वाधिक शक्तिशाली था तथा उसने अन्य कबीलों को विजित कर एक शक्तिशाली राज्य का निर्माण किया। कुजुल कडफिसेस ने हिन्दूकुश के पार भी राज्य विस्तार किया तथा संपूर्ण अफगानिस्तान व गांधार को अपने राज्य में मिला लिया, जिसके साथ ही पश्चिम के साथ सम्बन्ध स्थापित किया। कुजुल कडफिसेस ने ताँबे के सिक्के प्रचलित करवाएं। कुजुल के सिक्के हर्मियस के तांबे के सिक्कों के समान है जिसमें एक तरफ हरक्यूलस की मूर्ति तथा यूनानी अक्षर में हर्मियस तथा दूसरी ओर कुजुल कदफिसस खुदा है। विम कडफिसेस द्वारा स्वर्ण व ताँबे की मुद्रायें चलायी गई जिन पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि उत्कीर्ण है। विम कदफिसस के बहुत से सोने के सिक्के बड़े तथा छोटे प्रकार के प्राप्त हुए हैं जिनमें निम्न प्रकार के बड़े सिक्के प्राप्त हुए हैं –

१) पहला प्रकार जिसमें के ओर राजा शिरस्त्राण लिए हुए तथा दूसरी ओर शिव के हाथ में त्रिशुल और बैल के पास खड़े हैं ।

2) दूसरे प्रकार में मुकुटधारी राजा जो बादलों पर बैठा है।

३) तीसरे प्रकार में चौकोर क्षेत्र में राजा का मस्तक है ।

इन सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों में "बैसिलस ओएमो कदफिसस"और दूसरी ओर खरोष्ठी मे"महरजसराजतिस सर्वलोक ईश्वरस महिश्वरास विम कदफिसस"लिखा है। कुछ छोटे प्रकार के सिक्कों पर राजा का मस्तक और दूसरी ओर त्रिशूलधारी शिव हैं। विम कदफिसस का केवल एक चांदी का सिक्का प्राप्त होता है जो संभवतः सोने तथा तांबे के परीक्षण हेतु ढ़ाला गया चांदी का साँचा है। कनिष्क विम कदफिसस का उत्तराधिकारी था। इसके सोने तथा तांबे के सिक्के बहुतायत मे मिले हैं। इन सिक्कों पर बहुत से यूनानी, बौद्ध, ईरानी देवताओं का अंकन है विभिन्न देवताओं का ऐसा अपूर्व समावेश इससे पूर्व कहीं नहीं देखा गया। कनिष्क के सिक्कों पर यूनानी भाषा मे राजा का नाम और उपाधि अंकित है। चीनी तथा तिब्बती ग्रंथो में कनिष्क के शासन व विजयों का उल्लेख मिलता है। अश्वघोष के प्रभाव में कनिष्क ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा अपने शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया। कनिष्क के शासन तथा साम्राज्य विस्तार के बारे में विभिन्न लेखों तथा सिक्कों के माध्यम में पता चलता है। लेखों में कनिष्क महाराजाधिराज देवपुत्र की उपाधि से सुशोभित किया गया है। कनिष्क के बाद वशिष्क का उल्लेख है जिसका अभी तक कोई भी सिक्का प्राप्त नहीं हुआ है । इसके पश्चात् हुविष्क का उल्लेख है जिसके सिक्के मथुरा के अतिरिक्त और किसी भी स्थान से प्राप्त नहीं हुए हैं। हुविष्क के सिक्कों पर जो कि सोने तथा तांबे के हैं उन पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर यूनानी, हिन्दू और पारसी देवी–देवताओं की मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं। हुविष्क के काल की स्वर्ण व ताम्र मुद्रायें प्रचुर मात्रा में मिलती है। इनके अलावा अन्य उत्तराधिकारियों ने भी सिक्के प्रचलित कराये। कनिष्क तथा वासुदेव के नाम अंकित सिक्के जो अफगानिस्तान तथा सीस्तान से प्राप्त होते हैं किन्तु इन सिक्कों की गुणवत्ता पूर्व में प्राप्त हुए कनिष्क के सिक्कों से मेल नहीं खाते । इन सिक्कों के प्राप्ति स्थल कश्मीर से सीस्तान तक है जो क्रमशः कनिष्क द्वितीय, वसुदेव द्वितीय तथा वसुदेव तृतीय के काल के हैं, भारत का मथुरा प्रान्त तथा पूर्वी पंजाब इस समय तक कुषाणों के हाथों से जा चुका था। कनिष्क द्वितीय के सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में वीरू, वसु जैसे शब्द मिलते हैं जो वीरूपाक्ष, वासुदेव तथा महिश्वर हैं और ये कनिष्क द्वितीय के क्षत्रप थे। वासुदेव द्वितीय, कनिष्क द्वितीय का पुत्र था विरुपाक्ष तथा महिश्वर उसके भाई हैं जो गवर्नर थे। कनिष्क द्वितीय के अन्य सिक्कों पर वि, शी ,वृ अक्षर ब्राह्मी में उत्कीर्ण है जो संभवतः उन क्षत्रपों के नाम के संक्षिप्तीकरण हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में शासन किया । इस प्रकार के सिक्कों की प्राप्ति से यह सिद्ध होता है कनिष्क के काल में पंजाब आदि प्रांतो में क्षत्रपों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी । कुषाण वंश का उल्लेख श्रीधर्म पिटक, राजतरंगिणी, हुविष्क विहार इत्यादि अनेक स्रोतों से मिलता है।

मुद्राओं के प्राप्ति स्थल– उत्तर प्रदेश में मथुरा, हस्तिनापुर, मेरठ, कसिया, भीटा, सहेत–महेत, पंजाब , पठानकोट, बिहार के बोधगया, पाटलिपुत्र, तक्षशिला, पठानकोट, पेशावर, पटियाला, अफगानिस्तान इत्यादि अनेक स्थानों से कुषाण वंश की मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।

शोध पत्र का विषय– कुषाण काल में मुद्राओं का प्रचलन पर्याप्त मात्रा में हुआ है। वस्तुतः कुषाण वंश के बारे में जानने हेतु इन सिक्कों का उपयोग किया गया है। कुषाणों द्वारा प्रचुर मात्रा में स्वर्ण व ताम्र सिक्कों को प्रचलित किया गया। इन सिक्कों पर विभिन्न उपाधियाँ अंकित है तथा ये सिक्के कुषाण वंश की विजयगाथा के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

बारे में बताते है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम उन सिक्कों का वर्णन करेंगे जिन पर देवी–देवताओ का चिन्ह पाया गया है। इन सिक्कों को मुख्यतः चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। पहली श्रेणी में हम उन सिक्कों का वर्णन करेंगे जिन पर ईरानी देवी–देवता का अंकन है, तदोपरांत यूनानी देवताओ के अंकन वाली मुद्राओं का विश्लेषण करेंगे अन्य दो श्रेणियों में हिन्दू तथा बौद्ध धर्म से सम्बंधित सिक्कों का अध्ययन किया जाएगा।

(१) ईरानी देवता :

मिओरो– इनको वैदिक सूर्य देवता के समकक्ष समझा जा सकता है। इनका सम्बन्ध पर्सियन मिहर या मिथ्रा से भी है। कनिष्क तथा हुविष्क की मुद्राओं में इनका अंकन पाया जाता है।

मेओ– कनिष्क तथा हुविष्क प्रथम की मुद्राओं में इनका अंकन है। भारतीय चंद्र देवता तथा यवन के सेलेन देवता को इनके समतुल्य माना जाता है।

ओअनिंदो– हुविष्क के सिक्कों पर इन देवी का अंकन पाया जाता है। इन्हें युद्ध के देवी के रूप में जाना जाता है। अवेस्ता की वणिंदा तथा जोरोस्ट्रियन के वेरेथ्रांगा के समतुल्य इन्हें माना जा सकता है।

अथसो– अथसो का अंकन कनिष्क प्रथम तथा हुविष्क के सिक्कों में हुआ है। इसे अग्नि देवता माना जाता है। सिक्कों पर दाढ़ीयुक्त अग्निदेव अथसो को माला तथा टोंग्स धारण किया अंकित किया गया है। जोरोस्ट्रियन में अतर तथा पर्शियन में अताश को उनके समतुल्य रखा जा सकता है जिनका सम्बन्ध पवित्र अग्नि से है।

आरलैग्नो– आरलैग्नो केवल कनिष्क प्रथम के सिक्कों पर अंकित हुए हैं। इन्हें शस्त्रों का देवता भी माना जाता था तथा योद्धा वर्ग द्वारा युद्ध देवता के रूप में पूजा जाता था। जोरोस्ट्रियन के वेरेथ्रांगा तथा पह्लव के वरहरण के समतुल्य इनका स्थान है।

आएडो–कुषाण सिक्को में आएडो का अंकन लहरहाते स्कार्फ के साथ हुआ है। वैदिक परम्परा में इन्हे वायु देवता तथा जोरोस्ट्रियन में इन्हें वता के समतुल्य माना जा सकताहै।

(२) यूनानी देवता :

आरडोक्षो– आरडोक्षो को धन व सौभाग्य की देवी के रूप में माना गया है। विम कडफिश, हुविष्क तथा बाद के लगभग सभी कुषाण राजाओं के सिक्कों पर इनका अंकन हुआ है। इन्हे यूनानी देवी ताइके के समतुल्य माना जा सकता है। जोरोस्ट्रियन सम्प्रदाय में इन्हे सौभाग्य तथा विजय की देवी के रूप में स्थान प्राप्त है। आरडोक्षो को भारतीय देवी लक्ष्मी के रूप में भी माना जाता है।

फैरो– फैरो भी अथसो की भांति अग्नि देव है जिनका अंकन केवल हुविष्क के सिक्कों पर हुआ है। ईरानियों तथा यूनानियों सभ्यताओं में भी इनका प्रभाव देखा जा सकता है। जोरोस्ट्रियन के ख्वारेनह के समतुल्य इन्हें माना जाता है।

हेरैक्लिज– यूनानी देवता हेराक्लीज का अंकन कुजुल कड़फिसिस की ताम्र मुद्राओं में व्याघचर्म तथा गदा धारण किये हुआ है। हेराक्लीज को भारतीय भीम के रूप में भी माना जाता है।

नाना शाओ– मुद्राओं पर इनके विभिन्न नाम मिलते हैं जैसे नाना, नानशाओ, ननैइया इत्यादि। नाना शाओ पारसी मूल की मातृदेवी के समतुल्य माना जा सकता है। इनका अंकन प्रभामंडल से युक्त तथा हाथ में राजदंड के साथ हुआ है।

मैनाओवैगो– कनिष्क प्रथम तथा हुविष्क के सिक्कों पर इनका चित्रण मिलता है। इनको संस्त के वसु मानस के समतुल्य समझा जा सकता है। इनका अंकन चतुर्भुज देवता के रूप में हुआ जो सिंहासन पर विराजमान है। इनके मस्तक के पीछे अर्धचंद्र उपस्थित है। इनके पैरपाद–पीठ पर स्थित है।

हेलियास– हेलियास को सूर्य देव के रूप मे पुजा जाता है। इनके मस्तक के पीछे सूर्य का अंकन है। दाहिना हाथ आगे और बायां हाथ पीछे अवस्थित है।

सलीने– सलीने ग्रीक पौराणिक गाथाओं के अनुसार चंद्र देवी हैं किन्तु कनिष्क के सिक्कों पर इन्हे पुरुष देवता के रूप में दिखाया गया है ।

एरकिलो– अग्रभाग पर शिरस्त्राण पहने राजा पालथी मारकर बैठा है। कन्धे से अग्नि की ज्वालाएं निकल रही हैं। पृष्ठभाग पर दाढ़ीयुक्त नग्न हरक्यूलिस की प्रतिमा बांयी ओर खड़ी है। दाहिने हाथ में गदा है। बांयी भूजा पर सिंह चर्म रखा है। ग्रीक लेख ' 'एराकिलो'।

(३) हिन्दू देवता :

महासेनो– हुविष्क के सिक्कों पर इनका अंकन हुआ है। स्कन्दो तथा कुमारो की तरह योद्धा के रूप में अंकित किया गया है।

विजैगो– विजैगो भी कुषाण वंश में शैवत्व की महत्ता को बताती है। इनको भारतीय नक्षत्र देवी विशाखा के समतुल्य माना जाता है। विशाखा महाराज दक्ष की पुत्री थी। भगवान् कार्तिकेय के जन्म का नक्षत्र भी विशाखा है। देवी विजैगो का अंकन मुख्यतः हुविष्क के शासनकाल में स्कन्दो–कुमारो के साथ हुआ है।

स्कन्दो तथा कुमारो– स्कन्दो तथा कुमारो को योद्धा देव कार्तिकेय के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय परम्परा में कार्तिकेय शिव व पार्वती के पुत्र हैं। इस प्रकार कुषाण वंश पर शैवत्व का प्रभाव समझा जा सकता है। इन देवो का अंकन हुविष्क के काल में हुआ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

ओएशो– भारतीय शिव के समतुल्य ओएशो को भी शिव के योगिक रूप में अंकित किया गया है। कुषाण साम्राज्य के सिक्कों में इनका अंकन प्रचुरता में हुआ है। कुषाण मुद्राओं में इनका अंकन विभिन्न रूप में जैसे फरशा लिए, चतुर्मुख रूप में, त्रिमुख रूप में आदि में देखा जा सकता है।

(४) बौद्ध देवता

बोडो– बोडो अथवा बुद्ध का सिक्कों में अंकन कनिष्क प्रथम द्वारा कराया गया। बुद्ध का सिक्कों में अंकन प्रथम बार कनिष्क प्रथम के स्वर्ण तथा ताम्र सिक्कों में ही मिलता है। बुद्ध का अंकन सौंदर्य रूप में लम्बे अधोवस्त्र, सिरसचक्र, मस्तक के पीछे प्रभामंडल तथा कुण्डल युक्त हुआ है। कनिष्क प्रथम की मुद्राओं में बुद्ध के दो अवतारों का भी **अंकन हुआ है–** शाक्यमानो बोडो तथा मैत्रेय बोडो। महायान परम्परा में गौतम बुद्ध को प्रथम बुद्ध न मानकर शाक्य मुनि को प्रथम बोडो माना जाता है, शाक्यमानो बोडो का अंकन इसी को प्रदर्शित करता है। महायान तथा वज्रयान के अनुसार मैत्रेय बोडो को बुद्ध का भविष्य का अवतार माना जाता है।

सामाजिक विवेचना– कुषाण सिक्कों पर ईरानी, यूनानी, हिन्दू तथा बौद्ध धर्म से सम्बंधित देवी–देवताओ का अंकन प्रचुरता में हुआ है। कुषाण सिक्कों पर हिन्दू तथा बौद्ध धर्म से सम्बंधित देवताओं के साथ –साथ यूनानी तथा ईरानी देवताओं का अंकन एक वृहद् सम्मिलन को सुनिश्चित करता है। प्रथम कुषाण शासक कुजुल कडफिसस ने भारतीय बौद्ध धर्म ग्रहण कर के सामाजिक सम्मिलन की .ष्टि से महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कुजुल कडफिसस के सिक्कों पर 'ध्रमठिदस' का अंकन इसकी पुष्टि करता है जिसका अर्थ है 'धर्म में स्थित'। विम कडफिसस के काल में स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन बढ़ा तथा इन मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर शिव व नंदी का अंकन है। विम कडफिसस ने महिश्वर उपाधि को धारण किया जो उनके शैव मतावलम्बी होने का द्योतक है। एक महान शासक होने के साथ साथ कनिष्क की ख्याति एक बौद्ध धर्म के प्रचारक के रूप में भी है, संभवतः कनिष्क के शासन में अंतराष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने में इसकी महती भूमिका रही है। हुविष्क के सिक्कों पर यूनानी तथा हिन्दू देवताओं का अंकन मिलता है। वासुदेव के शासन काल में में भी यह प्रक्रिया अनवरत् रूप से चलती रही। वासुदेव के पश्चात् कुषाणों की अर्थ व्यवस्था का ह्रास होता मिल जाता है। आरडोक्षो का अंकन जो कुषाण सिक्कों पर मिलता है उन्हें गुप्त काल में देवी लक्ष्मी के रूप में पूजा जाने लगा। इसी प्रकार ओएशो को कालांतर में शिव के रूप में मान्यता मिली। इसी तरह समस्त कुषाण कालीन देवताओं का जो उनकी मुद्राओं द्वारा प्रचलित हुए बाद केभारतीय समाज में उनको हिन्दू देवी–देवताओं के रूप में पूजा जाने लगा।

उपसंहार– प्रारंभिक कुषाण सिक्कों की कल्पना ग्रीक पौराणिक कथाओं से बहुत अधिक आकर्षित हुई थी। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि उत्तर–पश्चिम तथा उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी तक हिन्द–यवन और बख्त्री–यवन ने शासन किया था।। मेसोपोटामियन, मिस्र और ईरानी सम्बन्ध की जानकारी हमें केवल कनिष्क प्रथम और हुविष्क के सिक्कों पर देखने को मिलता है। इन दो राजाओं के काल में कुषाण साम्राज्य सर्वोपरि था तथा उसका एक विशाल क्षेत्र था। भारत में प्राचीन काल से एक धार्मिक विचारधारा प्रवाहित हो रही थी और जिस पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम सदी के मध्य यूनानी तथा ईरानी सभ्यताओं ने प्रभाव डाला। अतः हम भली–भाँति कह सकते हैं कि कुषाणों द्वारा प्रचलित मुद्राओं में मुख्यतः चार प्रकार कि संस्तियों के देवी–देवताओं का अंकन हुआ है। ये देवता भारतीय समाज में आज भी अपने हिन्दू समतुल्यों के रूप में पूजे जाते हैं। देवताओं का अंकन उनकी सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने का प्रतीक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१– एन्शिएंट इंडियन कल्चर, कॉन्टेक्ट्स एंड माइग्रेशन, के.पी चट्टोपाध्याय, कलकत्ता, १९६५।
2– अर्ली हिस्ट्री ऑफ नार्थ इंडिया, एस. चट्टोपायाय, ए प्रोग्रेसिव पब्लिशर, १९५८।
३– कल्चरल हिस्ट्री ऑफ नॉर्दर्न इंडियाः प्रायर टू मेडीवेल पीरियड, कमला चौहान, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली,१९९८।
४– बुद्धिस्ट इंडिया, आर. डेविड्स इंडोलॉजिकल बुक हाउस, दिल्ली, १९७०।
५– फॉरेन इंलक्स एंड इंटरक्शन विद इंडियन कल्चर, एस. चतुर्वेदी, अगम कला प्रकाशन, दिल्ली, १९८५।
६– फॉरेन इन्लुएंस ऑन एन्सिएंट इंडिया, के. सी. सागर, साउथ एशिया बुक्स, दिल्ली,1993।
७– फॉरेन एलिमेंट्स इन एन्शिएंट इंडियन सोसाइटी, यू. पी. थपलियाल, मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, १९७९।
८– द डाईनस्टिक आर्ट्स ऑफ द कुशांस, जे.एम. रोसेनफील्ड, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, १९६७
९– प्राचीन भारतीय मुद्रायें, जे.एन. दुबे, प्रतिभा प्रकाशनदिल्ली, ७००१
१०– कुषाणा क्वाइन्स एंड हिस्ट्री, पी.एल. गुप्ता, एस. कुलश्रेष्ठा, डी. के. प्रिंटवर्ल्ड, दिल्ली,१९९३
११– प्राचीन भारतीय मुद्रायें, आर. राव, पी. के. राव, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९९८

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

१२– प्राचीन भारतीय मुद्रायें, वासुदेव उपाध्याय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९७१

१३– द कुषाण न्यूमिस्मेटिक, श्रवा सत्य, प्रनव प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८५

१४– प्राचीन मुद्रा, रामचंद्र वर्मा, कशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, १९८१

१५– इंडियन न्यूमिस्मैटिक स्टडीज, के डी वाजपेई, अभिनव प्रकाशन, न्यू दिल्ली, २००४

१६– भारतीय सिक्के, वासुदेव उपाध्याय, भारती भंडार, प्रयाग, २००५

*****